P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-IV*December-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत में आर्थिक विकास एवं असमानता का अध्ययन

उतसव आनन्द
सहायक प्राध्यापक,
अर्थशास्त्र विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय
विश्वविद्यालय, सागर

सारांश

आर्थिक विकास से समाज का धनी वर्ग ही लाभान्वित होता है, निर्धन वर्ग की उपेक्षा होती है जिसके फलस्वरूप आर्थिक असमानताओं एवं बेरोजगारी में वृद्वि होती है। भारत ने आर्थिक विकास के लिए नियोजित आर्थिक विकास का मार्ग चुना है। नियोजित आर्थिक विकास के अनेक उद्देश्य होते है जैसे राष्ट्रीय आय में वृद्वि, तीव्र औद्योगिक विकास, रोजगार के अवसरो में वृद्वि, आय व धन की असमानताओं में कमी करना। नियोजित आर्थिक विकास में एक ओर केन्द्रित नियोजन होता है जिसके अन्तर्गत उत्पादन तथा वितरण सम्बंधी निर्णय योजना आयोग द्वारा लिए जाते है जबकि दूसरी ओर मिश्रित अर्थव्यवस्था जिसमें सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र साथ साथ विकसित होते है। भारत में नियोजित आर्थिक विकास से आर्थिक सत्ता का केन्द्रियकरण हुआ है और आय एवं धन की असमानताओं में वृद्वि हुई है। हमारी सभी नीतियों का उद्देश्य समता और सामाजिक न्याय सहित तीव्र विकास और संतुलित आर्थिक विकास रहा है।

मुख्य शब्द : असमानता, निरपेक्ष निर्धनता, सापेक्ष निर्धनता, उपभोग, आर्थिक विषमता, पूँजी प्रधान तकनीक, श्रम प्रधान तकनीकी

प्रस्तावना

औद्योगीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से आर्थिक विकास होता है। यह सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की संरचना को प्रभावित करता है। आर्थिक परिवर्तन के साथ साथ सामाजिक परिवर्तन भी होते है। औद्योगीकरण के विभिन्न लाभ होने के परिणामस्वरूप यह अर्थव्यवस्था में आर्थिक असमानताओं में वृद्वि करता है। आर्थिक विकास से समाज का धनी वर्ग ही लाभान्वित होता है, निर्धन वर्ग की उपेक्षा होती है जिसके फलस्वरूप आर्थिक असमानताओं एवं बेरोजगारी में वृद्वि होती है। भारत ने आर्थिक विकास के लिए नियोजित आर्थिक विकास का मार्ग चुना है। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से देश का आर्थिक विकास किया जा रहा है। नियोजित आर्थिक विकास के अनेक उद्देश्य होते है जैसे राष्ट्रीय आय में वृद्वि, तीव्र औद्योगिक विकास, रोजगार के अवसरो में वृद्धि आय व धन की असमानताओं में कमी करना आदि। नियोजित आर्थिक विकास में एक ओर केन्द्रित नियोजन होता है जिसके अन्तर्गत उत्पादन तथा वितरण सम्बंधी निर्णय सर्वोच्च प्राधिकरण योजना आयोग द्वारा लिए जाते है जबकि दूसरी ओर मिश्रित अर्थव्यवस्था में अपनाए जाने वाला नियोजन है, जिसके अन्तर्गत सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र साथ साथ विकसित होते है। भारत में नियोजित आर्थिक विकास से आर्थिक सत्ता का केन्द्रियकरण हुआ है और आय एवं धन की असमानताओं में निरन्तर वृद्वि हुई है।

शोध का उद्देश्य

1. प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य भारत में आर्थिक, सामाजिक असमानता के कारणों को अध्ययन करना।
2. भारत में आर्थिक, सामाजिक असमानता की समस्या के समाधान के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-IV*December-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत संवृद्धि निष्पादन

पंचवर्षीय योजना	लक्ष्य वार्षिक (%)	उपलब्धि वार्षिक (%)
पहली योजना	2.1	4.2
दूसरी योजना	4.5	4.2
तीसरी योजना	5.6	2.6
चौथी योजना	5.7	4.9
पाँचवी योजना	4.4	5.4
छठी योजना	5.2	5.5
सातवीं योजना	5.0	6.7
आठवीं योजना	5.6	6.7
नौवीं योजना	6.5	5.5
दसवीं योजना	8.0	7.5
ग्यारहवीं योजना	9.0	7.7

Sources:- Govt. of India, the Planning Commission

जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में भारत का स्थान दूसरा है। भारत में रहने वाली जनसंख्या समस्त विश्व की जनसंख्या की 17.5 प्रतिशत है। 1951 की जनगणना के अनुसार 36.11करोड़ थी वह 2001 में 102.87 करोड, और 2011 में बढ़कर 121.02 करोड़ हो गई है।

भारत की जनसंख्या

जनसंख्या वर्ष	जनसंख्या (करोड़ में)	दशक में वृद्धिदर (%)
1951	36.11	–
1961	43.92	+21.64
1971	54.82	+24.80
1981	68.33	+24.66
1991	84.64	+23.87
2001	102.87	+21.54
2011	121.01	+17.7

Government of India,Census of India-2011.

तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 1951 से 2011 तक भारत की जनसंख्या में वृद्धि में धनात्मक वृद्धि हुई है।

भारत में साक्षरता

वर्ष	पुरुष साक्षरता (प्रतिशत)	महिला साक्षरता (प्रतिशत)	कुल साक्षरता (प्रतिशत)
1951	27.16	8.86	18.33
1961	40.40	15.35	28.30
1971	45.96	21.97	34.45
1981	56.38	29.76	43.57
1991	64.13	39.29	52.21
2001	75.26	53.67	64.84
2011	80.90	64.60	73.00

स्रोत–Government of India, Census of India-2011.

तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 1951 से 2011 तक भारत की जनसंख्या में महिला साक्षरता ;प्रतिशतद्ध दशकीय वृद्धि में धनात्मक वृद्धि हुई है।

भारत में कृषि जोत

क्र.	प्रकार	जोतो का आकार (हेक्टेयर में)	भारत में (प्रतिशत)	आर्थिक/ अनार्थिक जोत
1	सीमान्त	0-1.0	64.8	अनार्थिक
2	छोटे	1.0-2.0	18.5	आर्थिक
3	अर्ध–मध्यम	2.0-4.0	10.9	आर्थिक
4	मध्यम	4.0-10.0	4.5	आर्थिक
5	बड़े	10.0 या अधिक	0.8	आर्थिक

Sources:-Govt.of India, Ministry of Agriculture, Agriculture Statistics-2011

तालिका से स्पष्ट है कि भारत में आर्थिक जोतो की तुलना में अनार्थिक जोतो का प्रतिशत अधिक है।देश में कृषि जोतों का छोटा आकार एवं भूमिहीन श्रमिकों के अनुपात में वृद्धि होने के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता में वृद्धि हुई है।ग्रामीण क्षेत्रों में आज असमानताओं का मुख्य कारण भूमि एवं अन्य परिसम्पत्तियों को केन्द्रीकृत स्वामित्व है। हरित क्रान्ति से भी बड़े किसानों को अपेक्षाकृत अधिक लाभ प्राप्त हुआ है क्योंकि उनकी निवेश करने की क्षमता अधिक है। इसके साथ–साथ ही वित्तीय संस्थाओं से भी इन्हीं किसानों को ज्यादा ऋण सुविधाऐं प्राप्त हुई है।

निर्धनता को निरपेक्ष एवं सापेक्ष निर्धनता के रुप में परिभाषित किया गया है। निरपेक्ष निर्धनता से तात्पर्य मानव द्वारा आधारभूत आवश्यकताओं जैसे– भोजन, कपड़ा, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि की पूर्ति हेतु पर्याप्त वस्तुओं एवं सेवाओं को जुटा पाने की असमर्थता से है। सापेक्ष निर्धनता का अर्थ आय की असमानताओं से है। निर्धनता का सापेक्षिक दृष्टिकोण आय, संपत्ति तथा उपभोग के वितरण में व्याप्त विषमता को दर्शाता है।

योजना आयोग द्वारा निर्धनता रेखा से नीचे जनसंख्या का आंकलन

वर्ष	निर्धनता अनुपात (प्रतिशत में)			निरपेक्ष संख्या (करोड़ में)		
	ग्रामीण	नगरीय	अखिल भारत	ग्रामीण	नगरीय	अखिल भारत
1973–74	56.4	49.0	54.9	26.13	6.0	32.13
1977–78	53.1	45.2	51.3	26.43	6.46	32.89
1983–84	45.7	40.8	44.5	25.20	7.09	32.29
1987–88	39.1	38.2	38.9	23.19	7.52	30.71
1993–94	37.3	32.4	36.0	24.40	7.63	32.03
1999–00	27.1	23.6	26.1	19.32	6.71	26.03

स्रोत–Economic Survey, 2013-14.

वर्तमान में भारत की लगभग एक तिहाई आबादी गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन कर रही है।

गरीबी उन्मूलन के अनेक प्रयासों के बाबजूद भारतीय ग्रामीण क्षेत्र में व्याप्त निर्धनता के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों की स्थिति निरन्तर चिन्तनीय है। अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी अनिवार्य सुविधाएं जैसे– शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, परिवहन, आवास एवं विद्युत आदि का अभाव है।

असमानता के कारण

1. जनसंख्या वृद्धि असमानता का सबसे बड़ा कारण रहा है। जनसंख्या वृद्धि से व्यक्तियों के उपभोग स्तर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, साथ ही परोक्ष रुप से बचत एवं निवेश में भी बाधा उत्पन्न होती है।
2. जिन व्यक्तियों को अच्छे अवसर मिल जाते है वे अपनी आय एवं धन वृद्धि करने में सफल हो जाते है। जबकि अवसर न मिलने पर दूसरे लोग निर्धन रह जाते है।
3. सम्पन्न परिवारों में जन्म लेने वालों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है। जबकि निर्धन व्यक्ति मेहनती एवं होशियार होने पर भी अवसर के आभाव में पिछड़ जाते है।
4. अर्थव्यवस्था चाहे नियोजित हो या अनियोजित, विकसित या विकासशील या अर्धविकसित हो,में कीमतों का पर्याप्त प्रभाव होता है। कीमतें न केवल उत्पादन की मात्रा को प्रभावित करती है बल्कि यह आय को भी और आय में परिवर्तन के द्वारा उपभोग स्तर भी प्रभावित होता है। कीमतें ही बचत और विनियोग की मात्रा को निर्धारित करती है।
5. मुद्रा प्रसार के द्वारा आर्थिक विषमताओं तथा असमानताओं में वृद्धि के साथ–साथ आर्थिक एवं सामाजिक न्याय की अवहेलना होती है। भारतीय अर्थव्यवस्था एक समाजवादी अर्थव्यवस्था है। जिसमें वर्ग संघर्ष की समाप्ति, आर्थिक समानता, आर्थिक शोषण का अन्त, बेरोजगारी का अन्त आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
6. निजी निगम क्षेत्रों में परिसंपत्तियों का सकेन्द्रण उद्योगपतियों के हाथों में आर्थिक संपदा व आर्थिक शक्ति का सकेन्द्रण है। बैंकों व अन्य वित्तीय संस्थाओं से आसान शर्तों पर ऋण प्राप्त होने की सुविधा से तथा पूँजी बाजार के साधन एकत्रण की सुविधा से उन्हें परिसम्पत्तियों पर कब्जा करने में और अधिक सहायता मिली।
7. व्यवसायिक संगठनों में काम कर रहें उच्च अधिकारियों की आय बहुत अधिक है पर भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यवसायिक प्रशिक्षण की सुविधाएं सभी को उपलब्ध नहीं है। केवल धनी वर्ग के बच्चे ही उच्च शिक्षा व व्यवसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर पाते है। कृषि श्रमिकों, औद्योगिक श्रमिकों तथा दलितों व आदिवासियों के बच्चे इस प्रकार की शिक्षा की उम्मीद नहीं कर सकते।
8. भारत में व्यापक रूप से बेरोजगारी रही है क्योंकि ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के बेरोजगारी और अल्प रोजगार लोग अकसर सबसे निर्धन वर्ग में से होते है। इसलिए उनकी बढ़ती संख्या से आय असमानताओं में ओर अधिक वृद्धि हुई है। भारत देश में श्रमिकों की संख्या में वृद्धि के अनुपात में रोजगार के अवसरों में वृद्धि नहीं हुई है।
9. निजी निवेशक में शहरी क्षेत्र में अधिक ध्यान दिया जाता है। देश की लगभग 70% हिस्सा शहरी क्षेत्रों में स्थापित उद्योगों में जाता है। 1990 के दशक में शुरू की गई उदारीकरण और निजीकरण की प्रक्रिया में जहाँ कमजोर वर्गों को नुकसान पहुँचाया है वहा इन नीतियों से उद्योगपतियों और कम्पनी प्रबंधकों की आय में तेजी के साथ वृद्धि हुई है। अतः क्षेत्र में आय की असमानतायें बढ़ी है।
10. भारतीय संविधान का मुख्य लक्ष्य समाजवादी समाज की स्थापना में सन्निहित है, कोई भी आर्थिक सुधार तब प्रारंभ होता है, जब आम जनता की आवश्यकताएं, समाधान की प्रक्रिया की खोज के लिए प्रभावशाली बन जाती हैं, किन्तु यह सुधार आगे लगातार सम्पन्न होगा या नहीं, यह इस पर निर्भर करता है कि सामाजिक यथार्थता को कहां तक योजनाबद्ध विकास में स्थान दिया गया है, क्योंकि भावी सुधार और विद्यमान यथार्थता का घनिष्ठ संबंध होता है।

आर्थिक विकास एवं असमानता बीच संबंध स्थापित करने के लिये उपाय

1. लोगों को लाभकारी रोजगार उपलब्ध करना चाहिऐ क्योंकि जब लोगों को उत्पादक व अच्छे वेतन वाला रोजगार मिलता है तो उन्हें आर्थिक वृद्धि से प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होता है। इसके लिये उत्पादन के ढाँचे पूँजी प्रधान तकनीक की अपेक्षा श्रम प्रधान तकनीकी का अधिक उपयोग किया जाना चाहिए।
2. आय एवं आर्थिक अवसरों का वेहतर व न्यायाचित वितरण होना चाहिये क्योंकि इससे एक ओर तो सामान्य जीवन स्तर में सुधार होता है तो दूसरी ओर आर्थिक वृद्धि एवं मानव विकास में प्रत्यक्ष संबंध स्थापित होता है।
3. उत्पादक परिसम्पत्तियों (भूमि, भौतिक आधारिक संरचना तथा वित्तीय संसाधन) प्रदान किया जाना चाहिए क्योंकि इनके न होंने पर कई लोगों के (निर्धन जनता के) आर्थिक अवसर अवरूद्ध हो जाते है।
4. शिक्षा, स्वास्थ्य में निवेश करना चाहिए तथा सभी को मूलभूत सामाजिक सेवाएं उपलब्ध करना चाहिए। विकसित देशों के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि इन क्षेत्रों में सरकार द्वारा बड़ी मात्रा में निवेश करने से मानव विकास में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है।
5. पुरूषों तथा महिलाओं को बराबर विकास के अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। स्त्रियों को बेहतर सुविधाऐं प्रदान करने से तथा उन्हें वेहतर शिक्षा, ऋण सुविधाएं, रोजगार के अवसर प्रदान करने से उनके मानव विकास में सहायता मिलती है। Human Dev. Report 1996 के अनुसार स्त्रियों के सामर्थ में तथा उनकी योग्यताओं में निवेश करने से तथा उनके शक्तिकरण से आर्थिक संमृद्धि के साथ–साथ 'कुल विकास' में भी सहायता मिलती है।

6. आज जरुरत इस बात की है कि तमाम खाद्य सामग्री और जीवनोपयोगी सामान को कम से कम मानव श्रम के जरिये हासिल किया जाए। इससे हमारा मानव संसाधन दूसरे ऐसे नए कामों के लिए उपलब्ध हो जाएगा।
7. राजनैतिक स्तर पर 'बेहतर प्रशासन' प्रबंधन किया जाये। जो लोग सत्ता के है वे संपूर्ण जनसंख्या की आवश्यकताओं को उच्च प्राथमिकता दे।
8. मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार वेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य तथा पोषण व्यवस्था से आर्थिक समृद्धि की पूरी संभावना को ही बदला जा सकता है। विशेष तौर पर कम मानव विकास तथा कम आय वाले देशों को, वर्ल्ड बैंक के अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर आर्थिक समृद्धि में भौतिक पूँजी का केवल 16ः तथा प्राकृतिक पूँजी का केवल 20ः हिस्सा है। शेष 64ः मानव व सामाजिक पूँजी का परिणाम है।

निष्कर्ष

निर्धनता, बेरोजगारी एवं आर्थिक विषमता का मूल कारण है। भारत में निर्धनता, निरपेक्ष निर्धनता एवं सापेक्ष दोनों रूपों में पायी जाती है। सन् 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में सन् 1951 में आर्थिक नियोजन के माध्यम से तीव्र आर्थिक विकास करने का निर्णय लिया गया। हमारी सभी नीतियों का उद्देश्य समता और सामाजिक न्याय सहित तीव्र विकास और संतुलित आर्थिक विकास रहा है। फिर भी समाज का बहुत बड़ा समुदाय जो अभी भी निर्धनता के कुचक्र से मुक्ति नहीं पा सका है।

डॉ. अम्बेडकर के त्रयी सिद्धांत में स्वतंत्रता–समानता–भ्रातृत्व का विशेष महत्व है। तीनों एक दूसरे से भिन्न, किन्तु परस्पर संबंधित है प्रत्येक एक दूसरे पर आश्रित है और मानवीय संदर्भ में तीनों की प्रासंगिता सार्वभौम है।अम्बेडकर जी ने ''स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व'' को एक राष्ट्रीय आदर्श माना था। जिनका परिपालन जन साधारण, देश और समस्त मानव प्राणियों के हित में है। जब समाज में भ्रातृत्व मजबूत होगा तभी स्वतंत्रता व समानता भी मजबूत होंगी और लोकतंत्र भी सशक्त होगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. रामरतन शर्मा, विकास का अर्थशास्त्र एवं नियोजन, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
2. सी. एम. चौधरी, भारत में आर्थिक पर्यावरण, मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर।
3. अनुपम अग्रवाल, अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
4. भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
5. एस.के. मिश्र, वी.के. पुरी, भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई।
6. रूद्र दत्त, के.पी. एम. सुन्दरम, भारतीय अर्थव्यवस्था'' एस.चन्द एण्ड कम्पनी लि. रामनगर, नई दिल्ली।
7. गोयल, अनुपम, भारतीय आर्थिक समस्यायें एवं नीतियाँ, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, खजूरी बाजार, इन्दौर।
8. सिंह, रामगोपाल, विकल्प की तलाश, बुद्ध से अम्बेडकर तक, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर।
9. जाटव, डी.आर., डॉ. अम्बेडकर के त्रेयी सिद्धांत, समता साहित्य सदन, जयपुर राजस्थान।
10. बिजनेस स्टैंडर्ड, भोपाल।